अंतरा-शब्दशक्ति

सुनो ज़रा धीरे चलो ना ..

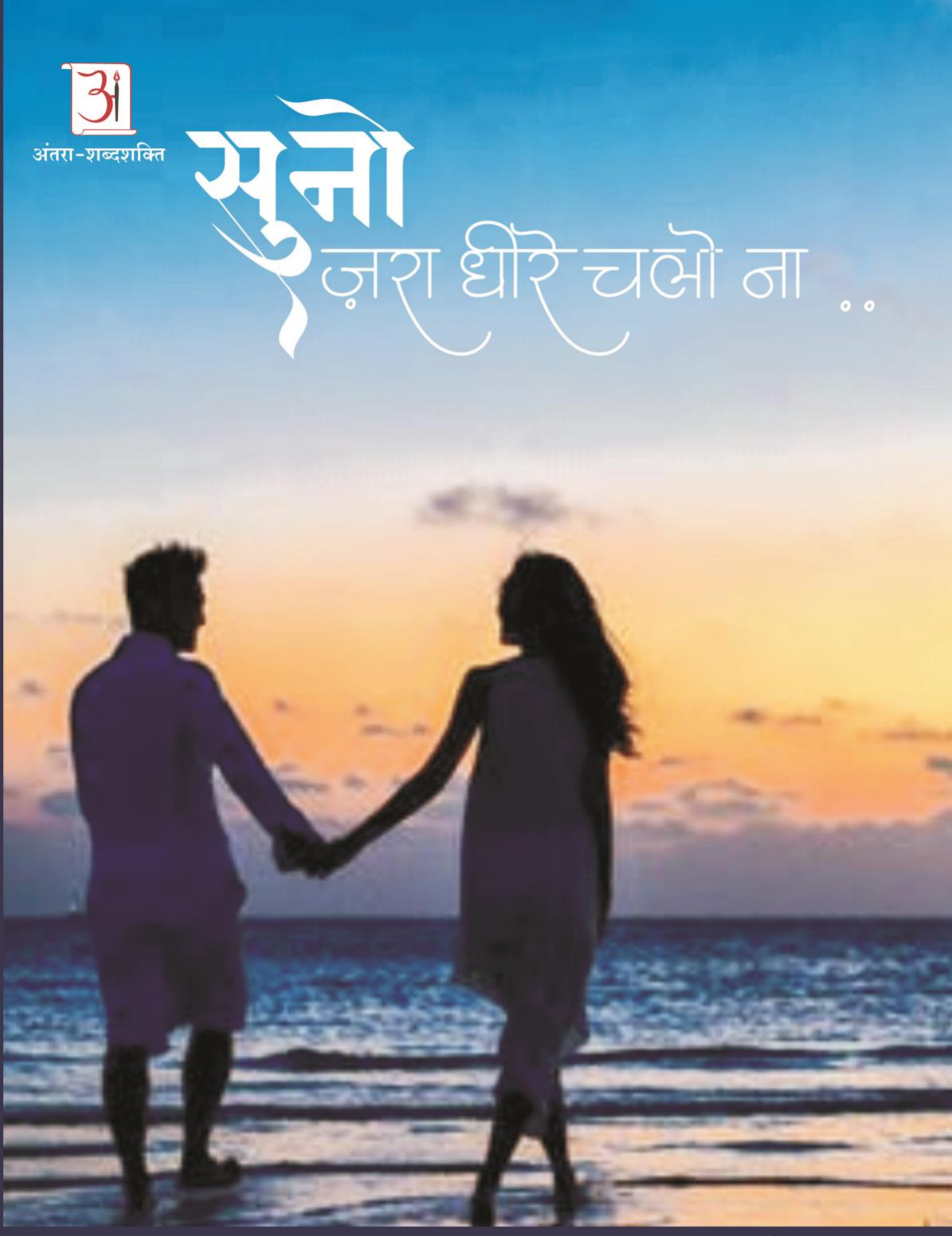

कविता संग्रह

वसुंधरा राय

सुनो! ज़रा धीरे चलो ना,..

(काव्य संग्रह)

वसुंधरा राय

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-88-9

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - वसुंधरा राय

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Suno! zara Dheere chalo na!! by Vasundharaa Rai

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

जीती रहो वसुंधरा....!

वसुंधरा अति संवेदनशील उत्साही और जुझारू रचनाकार है। न केवल साहित्य अपितू सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकारों से भी ये पूरी तरह से जुड़ी हैं। समय-समय पर समाजोपयोगी कार्यों में निरंतर नए-नए प्रयोग करती रहती हैं। साहित्यिक प्रतिभाओं को तलाशने और उनका उत्साह बढ़ाने के लिए उन्हें सम्मानित करने का एक क्रम भी वसुंधरा ने पिछले कुछ वर्षों से प्रारंभ किया है जो काफी उपयोगी सिद्ध हो रहा है। जहां तक इनकी कविताओं की बात है तो इनकी कविताओं में संघर्ष और इंकलाब के साथ-साथ महीन भावनाओं का भी विशेष चित्रण हुआ है। कुरीतियों और अत्याचारों के विरुद्ध आव्हान इनका प्रिय विषय है। नारी के सरोकारों से संबंधित हर बिंदु को वसुंधरा ने अपनी रचनाओं में बड़ी खूबसूरती से उकेरा है। वसुंधरा के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए मैं दुआ करता हूँ कि ईश्वर उन्हें और उनकी लेखनी को इसी प्रकार सदैव सक्रिय रखे। **आमीन।**

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सागर खादीवाला

शुभकामना संदेश

मैं ऐसा मानता हूँ कि शब्दों से ही दिलों पर राज किया जाता है। आत्म संघर्ष, श्रंगार, विरह, मानवीय जीवन मूल्य को प्रिय वसुंधरा जी ने अपनी कविताओं में जिस प्रकार स्त्री की हर कोमल भावना को अभिव्यक्त किया है वह प्रसंशनीय है। उनकी रचनाओं से उनकी संवेदनशीलता का परिचय मिलता है। मैं आशांवित हूँ भविष्य में भी वह काव्यानुरागियों के हृदय को अपने सशक्त शब्दों द्वारा कविताएं रचकर स्पर्श करती रहेंगी मै उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

वरिष्ठ पत्रकार नवीन गुप्ता

मन की बात

सुनो ज़रा धीरे चलो ना,..!

व्यक्तिगत मेरा प्रथम कविता संग्रह है जिसमें मैने स्वतंत्र कविताओं से व कुछ लयबद्ध गीतों के माध्यम से भावनात्मक रूप से एक स्त्री के मन को स्पर्श करने का प्रयासभर किया है।

मेरी दृष्टि में काव्य सृजन वर्तमान में अपनी अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। एक स्त्री अपने जीवन में एक बेटी, बहन, बहु, पत्नी और माँ के साथ साथ न जाने कितने किरदारों को जीती है, वह ये भी भूल जाती है कि वो भी है!! बस कुछ ऐसे ही विचारों में स्वयं ज़रा धीरे चलो ना काव्य संग्रह का निर्माण हुआ।

लेखन मुझे विरासत में मिला क्योंकि मेरे पिता स्व० रमेशचंद्र भट्टाचार्य जी भी लेखक थे। कविताएं तो मैं बचपन से शायद 6-7वीं क्लास से लिख रही हूँ लेकिन कवयित्री होने का खिताब मुझे मेरी 9वीं क्लास में लिखी गयी कविता जिसका शीर्षक 'पांच आंखे' था से मिला, मुझे याद है जब मैं स्कूल जाती थी उसी रास्ते में एक मानसिक विक्षिप्त महिला रोज़ मुझे मिलती थी उसके अस्त व्यस्त कपड़ों के कारण यूवा होते हुए बालकों से लेकर वृद्ध पुरूषों की अजीव से दृष्टि को उस समय जो मैनै महसूस किया और अपने शब्दों में कविता रूप में रच दिया तथा नहेरू यूवा केंद्र के मंच पर कविता पाठ किया तथा प्रथम पुरस्कार व सम्मानपत्र प्राप्त किया तो कह सकती हूँ कि वहीं से सही माईनों में मेरी लेखनी का विस्तार होता गया लेकिन लेखन को लेकर बहुत गंभीर नहीं हो पाई शायद ये उस समय की उम्र का तकाज़ा रहा होगा, फिर भी जो भी लिखती थी तो अपने पिता को सुनाती थी।

2007 में मुम्बई से पत्रकारिता में मास्टर डिप्लोमा कर प्रसिद्ध राष्ट्रीय मैग़जीन में फीचर राईटर के पद पर रह कर भी राष्ट्रीय स्तर पर लेख लिखती रही। 2008 विवाह उपरांत लेखन घर गृहस्थी की ज़िम्मेदारियों के

कारण स्वत: ही छूट गया। मैं भूल चुकी थी कि मैं कभी लिखती भी थी। ठीक 9 वर्ष बाद फिर से लेखन की ओर कलम बढी जो निरंतर चल रही है। वर्तमान में स्व० विश्वनाथ राय बहुउद्देश्यीय शब्द सुगंध संस्था की स्थापना कर समाजसेवा, साहित्यसेवा और सांस्कृतिक सेवा करते हुए तथा भारत के तमाम अखबारों के लिए लेख, कविताएं, साक्षात्कार कर रही हूँ।

जीवनसाथी श्री प्रतीक राय जी के सहयोग के बिना इस तरह कार्य कर पाना मेरे लिए संभव नहीं था, उनके साथ और सहयोग से ही सब संभव हो रहा है।

सात सांझा-संग्रह जिसमें कविताएं, दोहे, गीत व स्वतंत्र कविताएं सम्मलित हैं अब व्यक्तिगत कविता संग्रह 'सुनो ज़रा धीरे चलो ना,...' के माध्यम से सभी के हृदय को स्पर्श करने की कोशिश की है, आशा है कि सभी को मेरी कविताएं अवश्य पसंद आएंगी।

धन्यवाद

वसुंधरा राय

लेखिका/संपादिका

अनुक्रमणिका

1.	सुनो...ज़रा धीरे चलो ना!	7
2.	सत्य प्रेम	8
3.	कोमल अधर	9
4.	माँ	10
5.	बेलपत्र	11
6.	उलझा मन	12
7.	तब मै महिला दिवस मनाऊँ	13
8.	हे! नारी	14
9.	यदि संभव हो तो	15
10.	आशाओं के पंख	16
11.	सुनो परदेसी!	17
12.	एक लम्हा	18
13.	विस्तार	19
14.	काश तुम मेरे पास होते तो!!	20
15.	हाँ! है प्रतीक्षा!!	21
16.	तुम्हारा मौन	22
17.	बजने दो प्रेम राग झंकार	23
18.	सत्य कहना मेरे प्रिय	24
19.	भीतर के भीतर	25
20.	कविता पूछती है	26
21.	मेरी कलम की स्याही से	27
22.	कभी तो समझोगे प्राणप्रिय	28
23.	नैन यूँ चुरा रही	29
24.	चूड़ी वाले हाथों में ज़रूरी तलवार है	30
25.	क्षणिकाएं	31
26.	ओह बी प्रैक्टिकल !!	32

सुनो...ज़रा धीरे चलो ना!

सुनो वक़्त ज़रा धीरे चलो,...और धीरे
रफ़्तार कुछ ऐसे कि चल सको मेरे साथ
जीवन केअंतिम छोर तक
जैसे कि मैं ही मेरे साथ.....
हज़ार अरमानों को
कहीं गठरी में बाँध रख दिए मैने
आवाज़ देते हैं मुझे
खोल दूँ सबको, सब बँधनों से,..
तन्हाई मेरी आज भी बँधी है
घर की चार दीवारों की रीत में
सिसकी भी सिसकती आवाज़ में
कह रही है मुझसे कि तोड़ दूँ मैं अपनी ख़ामोशी को
नाज़ुक लम्हों में, बहते अश्कों में
वो जो ख़्वाव चटके पड़े हैं
मुझसे आज कह ही उठे कि तुम मुरझाना नहीं
कलियाँ जो खिल नही सकीं खिल जाने दो ना
बिखर जाने दो ना, अपनी ही खुशबू में .....
सदियों की जुदाई को बहने दो,..और.....और बह जाने दो
बह कर आ जाने दो ना अपने पास
सच कहती हूँ,....मैं स्त्री चाहती हूँ
वसुंधरा को वसुंधरा से मिल जाने दो ना
सुनो...वक़्त...ज़रा धीरे चलो ना...!

सत्य प्रेम

विचित्र विडंबना
कौमार्य को तुम ने
शरीर तक सीमित कर दिया,
कर दिया सीमित वो अखिल प्रेम
जो हो सकता था,
मेरा प्रेम तुम्हारे लिए
जो सिंदूरी हो सकता था
तुम देखो भीतर मन प्यासा सा रह गया
भ्रमित सा मन का क्षितिज रह गया
शरीर की परिधी
तक ना स्वीकार करो
समझो तो ढाई अक्षर प्यार को
कठिन जीवन काल में
जीत गूंजेगी जब झंकार में
तन नही मन दिखेगा प्रसार में
वक्ष में लिपटी मीठी ममता
सबके लिए महत्व में
सबको लेकर चलती
प्रकृति सा स्वभाव दिखता
स्त्रित्व में छल कपट से परे
प्रेम का नहीं होता शरीर से क्रय-विक्रय
सत्य प्रेम का बस अनोखा सा यही है परिचय....!

कोमल अधर

कोमल अधरों से मुस्काई वो
नयनों से नयन टकराए ऐसे
जैसे मदिरा की प्याली लिए
सजती संवरती कुसुम कली सुंदर
सदैव शाश्वत रहता रूप अमर
पीता रस भंवरा सौंदर्य लाली लिए
भर शील मादकता सी पहल
मचल गया मन का महल
स्वागत करता अतृप्त उमंग लिए
पुलकित उर अंतर नित्य सपना
देखते हैं तुम को मानकर अपना
विवश प्रेम नव तरंग लिए
दिखी ठगी सी माया सबकी
स्वर्ण शुद्ध सी काया उसकी
भीगा यौवन सोलाह सावन लिए
उजवल सौंदर्य महकता जैसे चंदन
कोमल पंखुडियां करती हैं अभिनंदन
समर्पित हैं नर जीवन लिए....!

माँ

मानव विकास का सुंदर अवतार नारी
दिव्य छवि मिटाती है अंधकार नारी
भीतर प्रभु शिशु बन आए देखो
वक्ष अमृत बना पी ली ममता सारी
धैर्य, विश्वास विष भावों की अंतर्यामी
निम्न पुरूष करता तुम पर मनमानी
छिन्न भिन्न बिखरती नहीं पलो में
तपकर बनाती साधन रिश्तों की रानी
प्रेम भाव की सुख प्रतिमा माँ
शीतल स्पर्श दुख हरती महिमा माँ
माँ कोख जीवन की प्रथम पाठशाला
घनी कालिमा में संवारती गरिमा माँ
निराश हुं अगर भर आंलिगन भींचती
अस्तित्व मिट्टी सा लहु से सींचती
जलनिधी तल में खिल ना पाती
हुं कमल माँ तुम ने बनाया कीमती
बैठी जो तुम्हारे आंचल अहसास करा
व्यथित हृदय से तारकर विश्वास भरा
दुख आंधी पीडा लहर उठे कैसे
माँ वसुंधरा का प्रेम देख जरा,..!

बेलपत्र

जिस दिन वेदना
से विचलित हो
तुम संवेदना में
डूब जाओगे
किसी और के
संकट में
अपना मैं छोड़
सहायक बन हो
आगे अपना
हांथ बढ़ाओगे
विपत्ति में
जब तुम
धैर्य रखने का
साहस दोगे
तब समझना
तुम काशी
के तट पर
गंगा जी जैसे
पवित्र और
शिवलिंग पर अर्पित
बेलपत्र कहे जाओगे,..!

उलझा मन

उलझा मन
घायल तन
आंखो में रूका
खारा जल
रुक जाऊं या बढ़ जाऊं
तूम्हे देखूं या अनदेखा कर दूं
देखो वो देखो
चारो यही शोर था
सुनो सुनो
व्याकुलता लिए
असमर्थ कृंदन था
भूमि की गोद
मौन शरीर था
भावनाएं, संवेदनाएं
लिए थी खालीपन
शायद
अंर्तमन को प्रश्नों ने घेरा
सोचता रहा यूं ही
तुम कब जागोगे
कब होगा सबेरा
यहां भी तुम मैं बनने में उलझा रहा,.. !

तब मै महिला दिवस मनाऊँ

जिस दिन मेरी कोख से
मैं स्वयं को बोझ नहीं समझुं
मैं मेरे लिए ईर्ष्या ना करूं
ना करूं क्रोध
मैं ही मुझमें अंतर का ना करूं अनुवाद
मेरे अपने ही कंठ में रूदन नाद ना हो मुझमे,
मेरे बीच ना हो व्याकुलता
मरूस्थल, मधुवन जैसे है दिखाई पड़ता
जिस दिन मुझमें
मैं विस्तार करूंगी लतिकाओं को
मेरे नयनों में भी मेरे सपनों
में खिलने दूंगी कलिकाओं को
मैं अकेली सहमी
ना मुझमें जाग्रत हो ये भावना
मुझे भी मेरे जैसा ही संभालना
मेरी सफलता सेना रहुं मैं बेचैन
मेरी प्रगती से भावुक हो
बह जाएं मेरे भी नैन
मेरी दृष्टि में मेरे लिए रह ना जाए कोई भेद
मेरे अंतरमन में मेरे शिखर के लिए
हो ना पाए कोई खेद
मैं मेरे स्वागत में जिस दिन मधुर गीत छंद रच कर गाऊं
उसी दिन से सही मायनों में मैं मेरे लिए महिला दिवस मनाऊं,..!

हे! नारी

हे! नारी,
बन जा तू नीलकंठ
और महादेव से मांग वर
कि पीले विष सारा मन
वासना ने जैसे छूआ तेरा तन
फिर भी
तू नहीं होना खंडित
छलकी छलकी
आंखो में नहीं दिखना व्यथित
आघात
प्रहार से रूके नहीं
तेरी सफल पथ यात्रा...
वेदना भी सिसकियां भर ना सके
ऐसी सबल बन
कि कोमल
करूणा सी रहकर
लो चंडी सा रूप निखार
अबला से सबला बन हे नारी
तू भर हुंकार
गूंजे तेरी पायल मे सफलता की झंकार.....!

यदि संभव हो तो

यदि संभव हो तो
तूम्हे
मनमीत
कह लेने दो
हृदय पट खोल पीर
सब कह लेने दो
अंग से अंग का मिलन
कब चाहा मैने
चाह कि मन
से मन मिल जाए
जहां अंग का लोभ ना हो,
लोभ हो हां! लोभ हो,..
तो तुम्हारे अमिट प्रेम की
प्रीतम भेंट की
जहां ज़रूरी
ना हो शब्दों की रागिनी की
किसी वाणी की
तुम्हारे मौन को समझने की आशा ,
कि लिख सकूँ
प्रेम की नयी परिभाषा
शेष नहीं रह जाए
कहीं कोई अभिलाषा,...!

आशाओं के पंख

समय अनमोल है यूं ना गावाना
संघर्ष काल में भी मत घबराना
तलवार धार पर चलते जीवन में
हिम्मत से बस तुम चलते जाना

विषम परिस्थितियों में ना झुक जाना
करो जतन तुम सफल पाँव बढ़ाना
रात के बाद सबेरा जैसे निश्चित है
आशाओं के पंख लगा तुम उड़ जाना
हिम्मत से बस.....

यही उदाहरण वसुंधरा पर मिलता
देखो कमल कीचड़ में ही खिलता
पीड़ा भी मुस्कुरा उठ कर गाती
जब परिचय जीत स्वर से मिलता
हिम्मत से बस.....

डूबते सूरज से जो भी है सीखता
दुख दर्द में रहकर भी वही जीतता
जीवन किसी के लिए नहीं ठहरता
मृत्यु सत्य आकर्षण जीवन ही खींचता
हिम्मत से बस.....!

सुनो परदेसी!

सुनो परदेसी!
हृदय गगन में
इंद्रधनुष के
फीके रंगो की पुकार
काश ! तुम सुन पाते.....

स्नेह का अपनेपन का
विरहन की रात
कितना करती घात
उस पीडा की गुंजन
काश !तुम सुन पाते.....

मेरे मन का राग
बिखरा-बिखरा सा सब अनुराग
ज्वालों सी तानो की मार
खंडित मन की आवाज
काश !तुम सुन पाते.....

मादकता से भरे
यौवन की वेदना की
सिसकियां
असफल कामनाओं का शोर
काश !तुम सुन पाते.....!

एक लम्हा

सुनो !!
जीवन की भागदौड़ में
थोड़ा सा रुक जाओ
और चुरा लो ना
एक लम्हा अपने लिए
उस लम्हें में मेरा लम्हा भी मिला लो
बना लो साथी अपने लम्हे का मुझे भी
जहाँ हम बाँट लें
अपने-अपने
जीवन के संघर्ष को
बांट सके अधूरी ख्वाहिशों को
जो हमको नहीं मिला
आओ एक दूसरे के चुराए लम्हों में
अपने हक़ के लम्हों की दुनिया बना लें .....
सुनो
मेरा लम्हा बेचैन है
तुम्हारे लम्हें से मिलकर
एक यादगार लम्हा बनने के लिए ....!

विस्तार

जिस दिन
सहानुभूति लेना बंद कर दोगी
उसी दिन से
माँ भवानी का रूप धारण कर लोगी
तो क्या जो नहीं हुआ
तुम्हारे हाँथ राक्षस का मुंड
दूसरे हाँथो तलवार
ये मायने नहीं रखते
मायने रखते हैं
तुम्हारे भीतर अखंड
ज्वाला जिसकी लौ
हो आत्मविश्वास
जो ना सह अत्याचार
भरो ऐसी हुंकार
कि भय हो भीतर बाहर
सौम्या, जया, शाम्भवी, भव्या
सब रूप तुम्हारे
अपने साथ
अपने भीतर करो साक्षात्कार
समय पर ले सको
काली माँ का भी अवतार
पहचानो,...स्वयं करो अपना विस्तार,..!

काश तुम मेरे पास होते तो!!

काश !
काश, तुम मेरे पास होते
तो
खोज लेती तुम्हारे भीतर
अपने उस कोने को
जहाँ तुम ने छुपा कर रखे हैं
मेरे हिस्से के शब्दों को
उन शब्दों में
मैं देखती अपनी महत्ता को
अपने प्रेम को,..
खोज लेती
अपने हिस्से के ख़्यालों को
तुम्हारे भीतर खोज लेती
अपने लिए तूम्हारी प्यास को
तुम्हारे भीतर
मेरे अहसास को
काश !
काश तुम मेरे पास होते
तो,... !

हाँ! है प्रतीक्षा!!

संजो लिया है मैने
तुम को ही तुम्हारे जैसा
जैसे तुम ने संजोया है मुझको अपनी यादों में
छुपा कर रख ली है सारे अरमानो की गठरी
और बांध रख दी मन के कोने में
हाँ! प्रतीक्षा है ,..
उस गठरी की गांठ खुलने की
जो अब तुम ही खोलेगे,
हाँ! प्रतीक्षा है.....
मेरे सपनो की दुनिया के दरवाज़े पर
लगा दिया है अपनी चुप्पी का ताला
और सील कर दिया है अपने आंसुओ से
साथ ही ये वादा भी है तुम से
कि तुम अब नहीं देख सकोगे
मुझे मेरे जैसा,..जैसा तुम ने देखा था ,
फिर खरीद ली है मैने उधार की दुकान से
नकली मौज मस्ती की गठरी....
हाँ !उसके साथ ही वो अरमानों की गठरी भी
मन के कोने में तुम्हारे आने की प्रतीक्षा में
कि तुम आओगे और मुझे मेरे अरमानों के साथ उड़ा कर
अपने साथ ले जाओगे हमारी दुनिया में..... !

तुम्हारा मौन

तुम्हारे मौन से
मेरी बातों का टकराना
बिन शब्दों में ना जाने
कितनी आशाओं का रह जाना
संभव नहीं प्रत्यक्ष मिलन
तो आकर स्वप्नलोक में मिल जाना
कुछ अपनी कह जाना
कुछ मेरी भी सुन जाना
भीतर व्याकुता
मन ही मन है कुछ रिसता
ना कोई बंधन
ना कोई रिश्ता
ना जाने फिर भी
उम्र के इस दौर में
तूझसे मन जो बंधा गया
वेदनाओं की सत्य धरा पर
न जाने कैसे आना तेरा हुआ
कल्पनाओं के गाँव में
लाल चुनर ओढ़ के
रूप मेरा साजन
खुशी से सज गया,..!!

बजने दो प्रेम राग झंकार

चम चम करते तारों मध्य
चंद्र का है गोल आकार
स्वप्नलोक मे आकर प्रिय यूं
मनमीत तुम हो जाते साकार
चॉदनी की कोमल चादर मे
तुम और मैं सिमट जाते
प्रेम भी है बहुत हैरान
प्रियतम से मिल नैन शरमाते
आशा न खंण्डित हो विश्वास
नहीं बंधन सा न कोई पिंजरा
बिखरूं जो रात चाँदनी मे
प्रिय तुम रहना साथ जरा
भावनाओ के सुंदर नगर मे
न छेडो संघर्ष और व्यापार
न करो बेस्वर खंड्हर वसुंधरा
बजने दो प्रेम राग झंकार,..!!

सत्य कहना मेरे प्रिय

यदि मैं न रहूँ
तुम्हारे जीवन में
सत्य कहना मेरे प्रिय यह बात...
कैसी होगी विरह ज्वाला
कैसा होगा विलाप.....
हे प्रिय!
कितने जाओगे तुम टूट
सब होकर भी क्या
सत्य में जाएगा सब छूट....
कोई रंग, रंग से मिला नहीं
सत्य यही है हे! जग,..
तन से तन का मिलाप नहीं...
हे प्रिय!
क्या कभी कह पाओगे यह राग
हां था, है, रहेगा,..मुझसे अनुराग
मेरा नाम लेकर
अज्ञात.....
रच पाओगे कुछ खास
हे प्रिय!
सत्य कहना कभी दे पाओगे
बंधनमुक्त मुझ जैसा तुम्हारे भीतर मेरा अहसास,...!

भीतर के भीतर

भीतर के भीतर
झांका मैने
अरमानों की डोली को
टूटा टूटा पाया मैने
रिश्तों में एक प्यार का रिश्ता
हिस्सों में बांटा मैने
सूना सूना आखों का मंज़र
मन खंडहर सा
होते देखा मैने
खोखली मुस्कानों में
कृदन को
छुपते देखा मैने
साथ होकर साथ
ना होना
आना और आकर जाना
वो दर्द दोनो के
भीतर रिसता देखा मैने,...!

कविता पूछती है??

कविता भी तड़प जाती है
जब उसमें बलात्कार जैसे शब्द आ जाते है,
रो कर कराह पड़ती है
जब रेप शब्द कविता का सार बन जाता है...
निर्भया आज भी मांगती इंसाफ है
उन्नाव हो, या हो कठुआ
एक निर्भया सोलह बरस की दूजी सोलह की आधी
दोनो भोली, प्यारी दोनो ही सादी
एक निर्भया ने पिता को खो दिया
और दूजी ने खुद की सांसो से नाता तोड़ लिया
कविता सोच में डूब यही विचारती
कि सोलह वाली निर्भया के कपड़ों में क्या कम था ?
सूट और दुपट्टे से तो पूरा ही ढ़का वक्ष था,
आठ बरस की निर्भया भी तो पूरी फ्रॉक में थी
फिर कैसे कोई इन्हें देख वासना से वशीभूत हो गया
क्यों अपनी मानवता भूल गया
कविता पूछती है सबसे
कब तक निर्भया के पहनावे पर दोष मढ़ते रहोगे ?
कब तक खुद की गल्तियों को छुपाकर
रसूकदार होने का रूतबा दिखाते रहोगे ?
क्यों और कब तक सबको डराते, धमकाते रहोगे ???

मेरी कलम की स्याही से

कविता बोलूँ , गीत रच दूँ ग़ज़लो की यही अभिलाषा
मेरी कलम की स्याही से बोलो क्या लिखुँ परिभाषा
छंदो से अधर सजा दूँ प्रीत तेरा रूप ऐसा
खिल गया है यौवन ऐसे फागुन की धूप जैसा
प्रीत हृदय के आँगन में मैं अपना मन हारा
मुक्त हँसी से नयन निहारें चारो दिशा रूप तूम्हारा
कविता बोलूँ गीत रच दूँ ग़ज़लो की यही अभिलाषा,..!

मेरी कलम की स्याही से बोलो क्या लिखुँ परिभाषा
यौवन का उन्माद ऐसा पवन पावन चहक उठा
तुम इतराईं ऐसे कि शब्दों में प्रेम बहक उठा
हिलोरें लेता मन का सावन गुलाबी हरी सी तरंगे
चंचल शोख सतरंगी चूनर परिणय पत्र भरी उमंगे
कविता बोलूँ , गीत रच दूँ ग़ज़लो की यही अभिलाषा,..!

मेरी कलम की स्याही से बोलो क्या लिखुँ परिभाषा
नैनों से जब नयन मिलते हैं बेकाबू मन मतवाला
झूमूं नाँचूं मृदंग लिए मैं मुझमें समायी यूँ मधुशाला
प्रेम का बंधन प्यासी काया कोयल कूंके बौराए जैसे
स्वर्ण स्वरूपा गोरी की माया देख मौसम बदला वैसे
कविता बोलूँ , गीत रच दूँ ग़ज़लो की यही अभिलाषा,..!
मेरी कलम की स्याही से बोलो क्या लिखुँ परिभाषा,..!

कभी तो समझोगे प्राणप्रिय

झर-झर बचपन झड़ गया,गुड्डा गुड़िया ना भाए अंगना।
लाल चूनर अब भाती है ,अच्छे लगते जब खनकें कंगना।।
पहन पायल छम-छम चलती, घूंघट में मैं गोरी-गोरी ।
चंद्रमा भी व्याकुल सा है , रूप मेरा कैसे करे चोरी ।।
कब आओगे बारात लेकर, पहनाओगे प्रेम के जेवर ।
हृदय हुआ है पागल-पागल, चले भी आओ घोड़ी चढकर ।।

दिन- रात संग रहते हो, प्राणों बसते तुम ही तुम ।
बँधन है ये कैसा साजन, प्रतीक्षा करता मनका आंगन।।
श्रंगारित छवि सहमी सहमी,पिया देख चोरी चोरी ।
वो अरमानो की डोली मे, सिर झुकाए बैठी भोली ।।
सागर प्रतिक्षण गहराता है, तड़पन सब छुपी घाव में ।
अंतरमन से खींचे जाती , प्रिय के छल प्रेम भाव में ।।

कभी तो समझोगे प्राणप्रिय, देखो घर मैं सांवरती ।
इंद्रधनुष सी काया उसकी, गुणों से रूप निखारती ।।
गरज गरज बादल जब बरसे, तन मन ने आँसू तोले।
रीत तोड़ो तुम सारे बंधन, बिखरी सी पायल बोले।।
कैसे बांहो मे भर छलते , यही सोचे माँ भारती ।
दहेज के दानव ने मारा , सिंदूरी आखिर हारती ।।

नैन यूँ चुरा रही

इंद्रधनुषी भावना, स्वप्नकार के हाथ में ,
लज्जित मुस्काई गौरी , नैन यूँ चुरा रही ।
यौवन का है उन्माद, लेती अंगड़ाई दिखे ,
अमृत मन मोहक, बात वो बता कही ।
मन मन बात करे, बीत जाती रात सारी ,
मदिरा सी मदमय, जाती यादों में बही ।
भर लेती आलिंगन, वो सोच में वसुंधरा ,
खिलती है कलियों सी, मुरझाए वो नही ।
कसकर कर पकड लो, ना जाऊं कहीं मै रूठ।
तुम से ही अहसास , सौंदर्य मेरा खिलता ।।
अनगणित जंजीर , फिर भी चमकी मिली ।
मैं से मैं हुं मिल गयी , आवरण है छीलता ।।
हृदय के प्रांगण मे, सुविशाल है प्यार ये ।
मनमीत आलिंगन , प्रियसी लज्जित मैं ।।
स्वर आनंद में मन , मनमीत चहुं ओर ।
प्रेम स्नेह जागा ऐसा, कोकिल कुंजित मैं।।
मनमीत दापंत्य सा , भावना नभ छूती है ।
वो चपल कल्पना हूँ , क्षणिक भ्रमित मैं ।।
चुंबन से मनमीत , डाल बाहें भर कर ।
भावनाओ का बंधन , फूल सुगंधित मै।।

चूड़ी वाले हाथों में ज़रूरी तलवार है

हँस कर सहने वाली ज़रूरी अब हुँकार है,..
चूड़ी वाले हाथों में ज़रूरी अब तलवार है,..

जाने कौन सी राहों पर मिल जाए शैतान कहाँ
गाँव शहर मुहल्लों में शायद हो हैरान वहाँ
चूर चूर हो सम्मान तूम्हारा चोटिल स्वाभिमान हो
कोमल सी ओ नारी ज़रूरी अब दुर्गा अवतार है। चूडी वाले हाथों में....

झाँसी की रानी का इतिहास हमको बताता है
स्वाभिमान से जीना स्त्री को यही सिखाता है
डरना नहीं किसी फरेबी मक्कार की टोली से
बन शक्ति स्वरूपा स्वयं साथ खड़ा विधाता है। चूड़ी वाले हाथों में....

हो ईश्वर की श्रेष्ठ सर्व प्रिय हृदय रचना
जननी बन इस विश्व की आधार तूम्हीं संरचना
त्याग तुम्हारे अनगिनत हैं संसार तेरा ऋणी हुआ
शत्-शत् प्रणाम तूझे ,चाहिए करनी तेरी अर्चना। चूड़ी वाले हाथों में...

बन काली तूझे तीसरी आंख अब दिखानी होगी
भर भीतर ममता बाहर तो आग बरसानी होगी
कोमल कली सी घूंघट वाली हे नारी वसुंधरा !
चिंगारी बनकर तूझे भी लिखनी कहानी होगी। चूड़ी वाले हाथों में...

क्षणिकाएं

मौन

मौन से मौन की भाषा, भावुक है बहुत, तुम्हारे लिए बेचैन हो तुम्हारे लिए अभिलाषित हैं ।
अतिरिक्त रिक्त है, हां!... हां! मन की दशा अचर्चित है कुछ अटपटे कुछ अन कहे संवादो में मैं ढूंढती हूँ तुम्हारे मौन में स्वयं को कि मैं कहां हूँ और कब तक,..?

तुम

तुम अक्सर बहुत बहुत करीब होते हो दूरी का
अहसास दिलाने के लिए..
लेकिन सच कहूँ तो ये दूरी ही हमें करीब बहुत करीब रखती है.....

मै कौन

अपना मान छोड आ जाती हूँ तुम्हारे पास हर बार तिरस्कृत होने के लिए,.
मैं रिक्तता भरने का कितना प्रयास करूं ?
तुम पुरूष और तूम्हारा पौरूष फिर मैं कौन क्या देह भर ....
देह भीतर उस नारी नारीत्व सम्मान का क्या ? कभी सोचा है ?

बंधन

मेरा तूम्हारा कोई बंधन नहीं फिर भी ना तुम अलग न मैं ।
जिंदगी में भी और मौत के बाद भी.....
जहां फुर्सत मिले तो एक बार सोचना जरूर कि इस फिरभी में क्या था,
क्या है, क्या रह जाएगा ??

ओह् बी प्रैक्टिकल !!

बाज़ार गयी थी,..
न न करते खरीद ही लाई,...प्रौफैशनलिज़म
कुछ अटपटे शब्द ,...जैसे प्रैक्टिकल
जो हावी हैं आज कोमल भावनाओं पर
फैशन के नाम पर या आधुनिकता की होड़ में
कहीं हम पीछे ना रहे जाए
तो ओह् प्लीज़,...बी प्रैक्टिकल !
शब्दों का ताना बाना बुन ही लिया मैनै भी
प्रैक्टिकल होने में!
अब मैं नहीं देख पाती तुम्हारे भीतर के उस पुरूष को
जो बहुत कम बोलता है
नहीं देख पाती उसके भीतर दबे उन भावोंको
जो हैं तो पर ना जाने कौन सा भय है जो रुक गया है
प्रैक्टिकल होने की पगडंडी पर !
संवेदनाएं हैं तोपर व्यक्त करने में कहीं मुझसे मेरा मैं ना छूट जाए
तो सफल हो ही गये तुम भी
अपनी व्यस्तताओं में मुझे अनदेखा करने में
लेकिन फिर भी भीतर के सच से कैसे भागोगे ?
बी प्रैक्टिकल,...
स्वीकार खुद में करो कि हम दोनो वहीं मौजूद हैं
जहाँ प्रैक्टिकली धड़कन धड़क रही है सुनकर
एक दूसरे की ना के बराबर सी आवाज़.....!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - वसुंधरा राय

जन्म - 31 जनवरी 1977

माताजी - श्रीमती विद्या भट्टाचार्य

पिताजी - स्व.श्री रमेशचन्द्र भट्टाचार्य

पति - श्री प्रतीक विश्वनाथ राय

शिक्षा - एम.ए. समाजशास्त्र, पत्रकारिता मास्टर डिप्लोमा (मुम्बई के.सी. कॉलेज)

पता - गोकुल हरे कृष्णा अपार्टमेंट, फ्लैट नं. 103, क्लार्क टाऊन, कड़वीचौक के पास नागपुर 440013 (महाराष्ट्र)

मो. - 9623692255

विधा - छंद मुक्त कविता, लघुकथा, दोहा छंद, अध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक विषयों पर लेख, वर्तमान में सामाजिक सेवा में संलग्न।

अनुभव - 2008 में मेरी सहेली राष्ट्रीय हिंदी मैगजीन में फीचर राईटर पदासीन। प्रतिष्ठित राजनैतिक, अध्यात्मिक और फिल्मी हस्तियों का साक्षात्कार।

प्रकाशन - गृहलक्ष्मी, दैनिक ग्वालियर, नवभारत समाचार पत्र, दैनिक तरुण भारती समाचार पत्र, दैनिक कामयाब कलम राजस्थान, दैनिक लोकजंग समाचार पत्र, दैनिक लोकमत समाचार पत्र महाराष्ट्र, दैनिक ख़बर वाहक, दैनिक सीमांत रक्षक समाचार पत्र राजस्थान, दैनिक भास्कर समाचार पत्र जैसे अनेको पत्रों मे लेख कविताओं का प्रकाशन।

- साँझा प्रकाशन - अपूर्वा (गीत संग्रह), हाइकु विशेषांक, मेरी सांसे तेरा जीवन - पर्यावरण पर दोहे, झाँकता चाँद-हाईकु संग्रह, अभिव्यक्ति के स्वर- लघुकथा संग्रह, तेरे मेरे शब्द - काव्य संग्रह (सभी सांझा संकलन में प्रकाशित)

सम्मान - अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018, अर्णव काव्य रत्न अलंकार, व्रत प्रतिष्ठान सम्मान, हाइकु मंजुषा रत्न सम्मान (छत्तीसगढ़), राज्य स्तरीय हाइकु सम्मान तथा साहित्यिक सृजन सम्मान। अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजन करवाने का गौरव प्राप्त ..।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-88-9

मूल्य- 55/-